ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -21 अंक - 11 सितम्बर-I-2019 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50

'गीता का नया अभिप्राय' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन

गीता को आध्यात्मिक भाव से समझना ज़रूरी

गीता एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ओ.आर.सी. में आयोजित 'अखिल भारतीय भगवद्गीता सम्मेलन' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए स्वामी धर्मदेव जी महाराज, उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश वी. ईश्वरैय्या, स्वामी गोपालकृष्णानन्द जी, योगाचार्य विपिन कुमार जोशी, ब्र.कु. बृजमोहन, डॉ. एस.एम. मिश्रा, ब्र.कु. मनोरमा, ब्र.कु. बसवराज, ब्र.कु. वीणा, ब्र.कु. उषा, डॉ. पुष्पा पाण्डे तथा अन्य।

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ओ.आर.सी. में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय भगवद्गीता सम्मेलन में स्वामी धर्मदेव महाराज,हरि मंदिर आश्रम,पटौदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था गीता को अपने व्यवहारिक जीवन से सारे विश्व में प्रत्यक्ष कर रही है। गीता का अध्ययन तो हम कई बार कर चुके हैं, लेकिन क्या कभी हमने उस पर अमल किया कि गीता हमसे क्या चाहती है? उन्होंने ये भी कहा कि गीता मात्र एक धार्मिक शास्त्र नहीं बल्कि एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है।

हैदराबाद,उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश वी. ईश्वरैया ने कहा कि गीता का ज्ञान हमें अहिंसा की प्रेरणा देता है, इसमें हिंसा व युद्ध का कोई स्थान नहीं हो सकता। वास्तव में व्यक्ति के मन में चलने वाले वैचारिक द्वन्द को युद्ध की संज्ञा दी गई है। साईंबाबा विद्यापीठ, हैदराबाद के पीठाधिपति स्वामी गोपाल कृष्णानन्द जी ने कहा कि अगर कोई गीता को आत्मसात कर रहा है तो वो केवल ब्रह्माकुमारी संस्था है। मैंने अनेकों बार गीता अध्ययन किया लेकिन फिर भी उसका रहस्य समझ नहीं पाया लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आकर मुझे गीता का सही अर्थ समझ में आया।

श्री महन्त तपकेश्वर मंदिर,देहरादून के योगाचार्य विपिन कुमार जोशी ने कहा कि आज हर कोई केवल अधिकारों की बात करता है, लेकिन अपने कर्त्तव्यों को भूल गया है। उन्होंने कहा कि गीता हमें कर्त्तव्यों के प्रति सजग करती है। गीता का यही संदेश है कि कैसी भी परिस्थिति में अपने कर्त्तव्यों का सही रूप से निर्वाह करना।

नेपाल के अमृतानुभव संघ राष्ट्र के ब्रह्मऋषि गौरीशंकराचार्य महाराज ने कहा कि गीता को लेकर कई तरह के विरोधाभास हैं। सम्पूर्ण शास्त्रों का सार परोपकार है तो हिंसक युद्ध की बात कैसे हो सकती है! उन्होंने कहा कि लक्ष्य तक पहुंचने का जो रास्ता है वह महाभारत है और उसमें आने वाली बाधाओं का समाधान गीता ज्ञान से होता है। गीता में मूल रूप से तीन बातें समायी हैं... मैं कौन, ये जगत क्या है और जगत का नियंता कौन है।

ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गीता की भूमिका को स्पष्ट करना है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय विश्व की वही दशा है जो गीता में वर्णित है। गीता का ज्ञान हमें आत्मिक चेतना के विकास की प्रेरणा देता है।

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा,गीता विशेषज्ञा,माउंट आबू ने कहा कि गीता के 18वें अध्याय में उपदेश दिया गया है मनमनाभव का। इंद्रियों को जीतने से ही मन को जीता जा सकता है। मन एक चंचल घोड़े की तरह है, उसकी दिशा उस ओर है जहां कई तरह के विकार हैं। आध्यात्मिक ज्ञान से ही मन को नई दिशा दे सकते हैं। मन को मारना नहीं, मोड़ना है। ईश्वर की तरफ मन का मुख कर देंगे, तो वह नियंत्रित हो जाएगा।

ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि मन को साफ और बुद्धि को स्वच्छ करना ही गीता का मूल उद्देश्य है।

कनार्टक के हुबली स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के निदेशक एवं गीता विशेषज्ञ ब्र.कु. बसवराज ने कहा कि गीता में वर्णित युद्ध मानस युद्ध है। गीता की व्याख्या चार बिंदुओं से की जाती है, वो हैं पौराणिक, ऐतिहासिक, तार्किक एवं आध्यात्मिक। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्माकुमारीज़ के इलाहाबाद सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा ने किया। कार्यक्रम में विद्वान, कुलपति, संस्कृत के प्राचार्य एवं संत महात्माओं सहित अनेक संख्या में गीता प्रेमियों ने शिरकत की। कार्यक्रम का सफलता पूर्वक समापन दिल्ली के सीरी फोर्ट ऑडिटोरियम में किया गया।

सम्मेलन में महानुभावों ने कहा...

- गीता धार्मिक शास्त्र ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवन पद्धति है - स्वामी धर्मदेव
- गीता अहिंसा का संदेश देती है - पूर्व न्यायाधीश वी. ईश्वरैया
- गीता का यथार्थ रहस्य समझाती है ब्रह्माकुमारी संस्था - स्वामी गोपालकृष्णानन्द
- गीता का संदेश- अपने कर्त्तव्यों का सही रूप से निर्वाह करना - महन्त तपकेश्वर
- मैं कौन, जगत क्या और जगत का नियंता कौन... ये रहस्य गीता में- ब्रह्मऋषि गौरीशंकराचार्य
- आत्मिक चेतना के विकास की प्रेरणास्रोत गीता - राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन
- गीता का आध्यात्मिक रहस्य... अपनी इंद्रियों पर शासन करना - राजयोगिनी ब्र.कु. उषा
- मन को साफ और बुद्धि को स्वच्छ करना ही गीता का मूल उद्देश्य - राजयोगिनी ब्र.कु. आशा
- गीता में वर्णित युद्ध... मानस युद्ध - राजयोगी ब्र.कु. बसवराज

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय भगवद्गीता सम्मेलन का ओ.आर.सी. गुरूग्राम में शुभारंभ हुआ तथा दिल्ली के सीरी फोर्ट सभागार में यह सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

ब्रह्माकुमारीज़ समाज को सकारात्मक दिशा देने में सक्षम

"खुशनुमा महिला, खुशनुमा परिवार" विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय महिला सम्मेलन

ज्ञानसरोवर। रेखा शर्मा, अध्यक्षा,राष्ट्रीय महिला आयोग,दिल्ली ने ब्रह्माकुमारीज़ के महिला प्रभाग द्वारा "खुशनुमा महिला-खुशनुमा परिवार" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि त्याग, तपस्या व सेवा की प्रतिमूर्ति महिलाओं को मेडिटेशन के ज़रिए अपने सामर्थ्य को जागृत करना होगा।

राजस्थान सरकार की महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री ममता भूपेश ने कहा कि मेडिटेशन तामसिक विचारों को नष्ट करता है। सशक्त होने का अर्थ सिर्फ यह नहीं कि महिलायें पढ़ लिख जायें बल्कि स्वयं में आंतरिक शक्तियों से ऊर्जा का संचार भी हो। आध्यात्मिक शक्तियों की ऊर्जा से परिपूर्ण ब्रह्माकुमारी बहनों का सानिध्य समाज को सकारात्मक दिशा देने में सक्षम है।

मंचासीन ब्र.कु. डॉ. सविता, रेखा शर्मा, ब्र.कु. चक्रधारी, ममता भूपेश, ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. शीलू, संगीता गर्ग तथा ब्र.कु. रानी।

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी की सचिव व प्रवक्ता संगीता गर्ग ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में महिलाओं को आशावादी मानसिकता नहीं छोड़नी चाहिए। मेडिटेशन के ज़रिए ईश्वर से मन के तार जोड़ने पर अलौकिक शक्ति प्राप्त होती है। ज्ञानसरोवर निदेशिका ब्र.कु. डॉ. निर्मला ने कहा कि महिला परिवार को एकता के सूत्र में बांध कर रखने की महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। ब्रह्माकुमारीज़ महिला प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु. चक्रधारी ने कहा कि नारी शक्ति परिवार की वो धुरी है जो परिवार में शांति का माहौल कायम रख सकती है। दहेज जैसी कुप्रथा को समाप्त करने में महिलाओं को आगे आने की ज़रूरत है। शिक्षा प्रभाग उपाध्यक्ष, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. शीलू ने कहा कि संसार में आधे झगड़ों का कारण मनुष्य के बोल होते हैं। हमें अपनी सोच, अपने बोल, अपने शब्दों पर ध्यान देने की ज़रूरत है। मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता ने कहा कि नम्रता व्यक्ति को सम्मान देती है, श्रद्धा व्यक्ति को मान देती है और योग्यता व्यक्ति को महान बना देती है। राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. रानी ने सभी को राजयोग का अभ्यास कराते हुए गहन शांति की अनुभूति कराई।